पत्रांक .यूपीएए / 04 / 1 / 120 / 01–2016
दिनाकः– 01.02.2016

सेवा में,
माननीय प्रधान मंत्री
भारत सरकार
नई दिल्ली–110001.

विषयः– <u>राष्ट्र के संसाधनों के सदुपयोग के संबंध में।</u>

महोदय,
आपके सत्तासीन होने के बाद देश की आर्थिक दशा में परिवर्तन प्रारम्भ हो गये है। हम लोग आपके नेतृत्व में आस्था रखते हुए इस बात से आश्वस्त हैं कि यह आर्थिक बदलाव धीरे–धीरे गति पकड़ेगा तथा राष्ट्र में संसाधनों का बटवारा अब उचित एवं तार्किक रूप से हो सकेगा। परिणाम स्वरूप गरीबी तथा अमीरी के बीच की खाई भी घटेगी। समय समय पर आपके द्वारा विभिन्न माध्यमों से यह आश्वासन भी निरन्तर दिया जा रहा है कि अब देशवासियों को एक ठोस तथा मुकम्मल शासन व्यवस्था सुनिश्चित होगी।

इसी क्रम में हम आपका ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहते है कि पिछली सरकारों की आर्थिक नीतियों के कारण संसाधनों के बढ़ने के साथ विपन्नता भी बढ़ी है। तमाम प्रयासों के बावजूद भी हम अभी तक ऐसी नीतियां नही बना सके जो सभी का यथोचित कल्याणकारी हों। शायद ऐसी परिस्थितियां नीति नियन्ताओं की मानवीय कमजोरियों की प्रबलता के कारण पैदा हुई हैं। मानवीय कमजोरियों के साथ अर्जित संसाधन हमें विलासिता की ओर ले जाते है। भारतीय परिदृश्य में इसकी सीमा रेखा इस लिये परिभाषित होनी चाहिए कि अब यह विलासिता समाज के एक वर्ग द्वारा संसाधनों के दुरूपयोग की सीमा तक पहुॅच रही है अपनी विषिश्टता दिखाने के लिये इस दुरूपयोग का एक उदाहरण हम आपके संज्ञान में लाना चाहते है कि अब ऐसे अवासीय फ्लैट भी बन रहे है जिनमें प्रत्येक फ्लैट के लिए एक लिफ्ट होगी। इस प्रकार जहां एक ओर इनके निर्माण में संसाधन खर्च होंगें वहीं दूसरी ओर रख–रखाव तथा बिजली इत्यादि पर भी भार बढ़ेगा। अतः हम आपसे प्रार्थना करते है कि राष्ट्रीय आवास नीति, राष्ट्रीय भवन संहिता तथा सभी प्रांतीय भवन उपविधियों में सुसंगत बदलाव कराने की कृपा करें।
चूंकि हमारी सरकार जनसाधारण के प्रति संकल्पित है। अतः जन साधारण की भावनाओं को आप तक पहुॅचाना हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य है। वर्तमान सरकार के संवेदनशील होने के कारण अपनी सहभागिता सार्थक लगती है। हमें आशा है कि आपका ध्यान इस ओर अवश्य आकर्षित होगा।

सधन्यवाद।

भवदीय

राजीव कुमार द्विवेदी
अध्यक्ष